उपसंहार

उपरोक्त शोध कार्य का अवलोकन और विश्लेषण करने के उपरांत केवल एक ही बात सामने निकल कर आती है कि शशि कपूर सिनेमा और रंगमंच दोनों क्षेत्रों में ही विविध आयामों में पारंगत व्यक्ति रहे हैं। उन्होंने केवल अपने काम से प्यार किया फिर चाहे वह रंगमंच हो या सिनेमा। उनको जो भी कार्य मिला उन्होंने पूरी लगन और निष्ठां के साथ किया।

वह रंगमंच में एक अभिनेता के साथ-साथ रंगमंच के पीछे एक सहायक मंच निर्माणकर्ता के तौर पर भी कार्य करते थे। वह "पृथ्वी थियेटर" के मैनेजर भी रहे। इस लिए सारे कार्यों को पूरा करना उनकी जिम्मेदारी भी थी। यह एक महत्वपूर्ण कार्य था। उसी बीच जेनिफर से प्रेम फिर शेक्सपियराना में इंट्री जेनिफर से विवाह, सिनेमा में जाने का फैसला शशि कपूर ने तब किया जब वह मात्र 20 वर्ष के थे। आज 20 वर्ष का बच्चा कॉलेज जाते हुए भी डरता है, बिना पिता से पूछे कोई फैसला नहीं कर पाता, लेकिन शशि कपूर जो करना चाहते थे उन्होंने किया और किसी की नहीं सुनी। इन्हीं बातों से पता चलता है कि शशि कपूर में निर्णय लेने की अदभुत क्षमता थी तभी वह जेनिफर को अपने साथ सिंगापुर से बॉम्बे ले कर आ सके और उनसे विवाह किया जबकि सिंगापुर में शेक्सपियराना छोडते समय उनकी जेब खाली थी और टिकिट का बंदोबस्त भी नहीं था ऐसी कठिन स्थिति में उन्होंने जेनिफर से शादी और शेक्सपियराना छोडने का कठिन निर्णय लिया। कठिन समय में निर्णय लेने की क्षमता का इम्तहान उन्होंने अपने जीवन में कई बार दिया और अपने ठोस निर्णयों पर अडिग रहे।

पृथ्वी राज कपूर से उन्हें जो शिक्षण मिला और अपने भाई राज कपूर से उन्होंने जो सीखा, वह अपने पूरे जीवन भर उन्हीं संस्कारों पर चले, उन्होंने राज कपूर से भी अलग सिनेमा बनाया जो काम राज कपूर नहीं कर पाए वह सिनेमा और व्यवसाय में फंस कर रह गए और बाद में बॉबी जैसी कामर्शियल फिल्मों का भी

निर्माण किया, इसमें कोई शक नही है कि राज कपूर बहुत बड़े फिल्म निर्देशक, निर्माता और अभिनेता थे जिन्होंने ने विश्व स्तर पर कपूर परिवार और हिंदी सिनेमा को पहचान दिलाई। उनकी फ़िल्में भी लीक से हट कर थीं और आम जन जीवन से प्रभावित होती थीं फिर चाहे वो आग हो या आवारा हो, जागते रहो हो या मेरा नाम जोकर ही क्यों न हो। सारी फिल्मों में एक व्यावसायिक दृष्टि नज़र आती है जो कहीं न कहीं सही भी है क्योंकि व्यवसाय सिनेमा की तासीर है और जो इन दोनों नावों पर खड़ा हो संतुलन बना पाया वह एक बड़ा फ़िल्मकार साबित हुआ उदाहरण है बिमल राय, लेकिन शशि साहब सिनेमा के प्रति बहुत संवेदनशील नज़रिया रखते थे, क्योंकि वह खुद एक कलाकार थे और व्यवसाय उन्हें छू कर भी नहीं गुजरा था। शशि कपूर ने कभी सिनेमा को व्यवसाय की दृष्टि से नहीं देखा वह एक कलात्मक और सार्थक सिनेमा की सोच को लेकर चलते रहे उन्होंने केवल अच्छे सिनेमा का निर्माण किया उन्होंने बड़े से बड़े निर्देशक के साथ अपनी फिल्मों का निर्माण किया लेकिन इन फिल्मों का व्यवसाय पक्ष अच्छा नहीं रहा जिसके कारण उन्हें अपनी सारी जमा पूंजी से हाथ धोना पड़ा।

उन्होंने कभी भी अपनी सोच और अपने काम से समझौता नहीं किया और अच्छे सिनेमा का निर्माण करते रहे जब तक संभव हो पाया (जब तक उनके घर पर इन्कमटैक्स का नोटिस नहीं लग गया और उन्होंने अपनी सारी जमा पूंजी फिल्म निर्माण में नहीं लगा दी) उन्होंने अपने घाटे से उबरने के लिए एक व्यवसायिक फिल्म बनाने का निर्णय भी लिया और खुद उसके निर्देशन की डोर भी संभाली लेकिन वह इस फिल्म से और उलझ गए क्योंकि वह एक संवेदनशील व्यक्ति रहे हैं सिनेमा और रंगमंच से उनका आत्मिक लगाव है इसलिए वह सिनेमा और व्यवसाय के बीच के संतुलन को नहीं बना पाये वरना आज उनकी फिल्मों का स्थान ही कुछ और होता उनका कलात्मक सिनेमा के प्रति समर्पण अतुलनीय है। वह कलात्मक फिल्मों के बड़े निर्माता कहे जा सकते हैं और जिस श्रेणी में आज श्याम बेनेगल, दीपा मेहता,

सत्यजित राय, विमल रॉय, राज कपूर, वासुभट्टाचार्य, आदि फ़िल्मकारों को देखा जाता है उसी श्रेणी में शशि कपूर को भी देखा जाना चाहिए।

उनकी फिल्मों का अवलोकन आज गोवा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव 2015 में किया जा रहा है जिससे उनकी फिल्मों को पुनः देखा जा सके और उनसे फिल्म निर्माण के क्षेत्र में एक नई दिशा की खोज कर सकें। उनकी फिल्मों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है जिस प्रकार आज उनके कार्य को परखा जा रहा है यह इस बात की पुष्टि देता है कि सिनेमा में शशि कपूर का महत्वपूर्ण स्थान सुनिश्चित है।

उन्होंने सिनेमा में आने के लिए जितना संघर्ष किया शायद किसी और कपूर ने इतना संघर्ष किया। शशि कपूर ने अभिनय किया शुरू में नहीं चले पांच साल तक वह अपनी अदाकारी से नाउम्मीद हुए। बाल कलाकार के रूप में शशि कपूर ने सिनेमा में अपनी पहली फिल्म से ही अपने आपको स्थापित कर लिया था लेकिन जब बड़े होकर फिल्मों मे काम मांगने गए तो हर जगह से नाउम्मीद ही हाँथ लगी, उसके बाद काम मिला फ्लॉप हुए नंदा का साथ मिला और एक समय आया की वह उस दौर के सबसे बड़े अभिनेताओं में गिने जाने लगे। उन्हें उनके अभिनय के लिए तीन तीन फिल्म फेयर अवार्ड मिले। दिवार में दमदार सहायक अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार, पद्मभूषण सम्मान तथा हाल ही में दादा साहब पुरस्कार उनके जीवन की सबसे बड़ी कमाई है जो कुछ चुनिन्दा लोगों को ही प्राप्त होती है।

शशि कपूर इन सब के हक़दार हैं लेकिन उनके कार्य को थोड़ी देर से सराहना मिली। उनके कार्य का आकलन काफी समय पहले ही हो जाना चाहिए था। शशि कपूर पहले विदेशी फिल्म करने वाले अभिनेता थे। एक दौर में उनके पास लगभग 130-150 फिल्मों के अनुबंध थे जिससे पता चलता है कि वह उस दौर में किस ऊंचाई पर थे।

उनके बारे में कई फ़िल्मकारों ने टिप्पणी भी की है –

मधु जैन की किताब जिसे हिन्दी में अनुवादित किया है शिवानी खरे ने उसमें कुमार शहनी कहते हैं कि 'हिंदुस्तानी निर्देशकों ने शशि कपूर की काबिलियत का सही इस्तेमाल नहीं किया और कहीं पर इस कलाकार में भी कुछ हासिल करने का जुनून नदारद रहा 'शशि में होसला नहीं था' वह राज कपूर से बड़े अदाकार हो सकते थे'

'वह हिदुस्तानी फिल्मों के कैरिग्रांट बन सकते थे' एक अमेरिकी निर्देशक का कहना था जेम्स आइबरी कहते हैं।

वरिष्ट पत्रकार और राज कपूर जी के साथ रहे तथा उनके करीबी मित्र जय प्रकाश चौकसे जी भी इस बात को मानते हैं कि शशि कपूर को उनकी क्षमता के मुताबिक काम नहीं मिला और वह केवल अपनी रूमानी और रोमांटिक छवि में बंध कर रह गए वरना वह अच्छा कर सकते थे।

उपरोक्त कथनों से इस बात की भी पुष्टि होती है कि शशि कपूर में अभिनय क्षमता कम नहीं थी वह भी और कपूर सदस्यों से उम्दा अभिनेता थे और उन्होंने दीवार , मुहाफ़िज़, कभी कभी, जब जब फूल खिले, वक्त, जुनून, विजेता, कलियुग जैसी फिल्मों में अपने आपको एक अभिनेता के तौर पर साबित भी किया है

शोध कार्य को प्रारंभ करने से पहले जो परिकल्पनाबनाई थी, उसमे से कुछ तथ्यों के आधार पर सही साबित हुयी और कुछ निराधार। केवल मनगढ़ंत बातों के अलावा और कुछ नहीं। इस शोध में परिकल्पना के आधार पर तथ्यों को खंगालना प्रारंभ किया तो लगभग बातें सही थीं। इस शोध का उद्देश्य ही उनके व्यक्तिगत जीवन तथा उनके रंगमंच और सिनेमा में किये गए कार्य को समझना था। यह शोध कार्य शशि कपूर के जीवन के उन पहलुओं पर है जो अभी तक परदे के पीछे रहा है।

शशि कपूर का जीवन बहुत सादा रहा। 18 साल की उम्र में प्यार 20 की उम्र में शादी फिर एक साल बाद बेटे का जन्म। फिर सिनेमा में स्ट्रगल, असफलता, सफलता फिर असफलता। विश्व स्तर पर सिनेमा की दुनिया में छा जाने वाला दौर फिर एक दम पूरे करियर को ख़त्म कर एकाकी जीवन जीना जेनिफर का उनसे दूर जाना। उनका जीवन अगर एक ग्राफ पर चित्रित किया जाये तो वह अदृश्य गति बताने वाली उतार चढ़ाव से भरपूर लकीर से कम नही दिखाई देगी। शशि जी का जीवन संघर्ष से भरपूर रहा उन्होंने जब से अपना सिनेमाई सफ़र शुरू किया संघर्ष का दौर उनके साथ ही रहा और आज भी वह कुछ इसी प्रकार का संघर्ष अपने जीवन को जीने के लिए कर रहे हैं। इन्हीं सारी बातों पर ध्यान केन्द्रित कर इस शोध कार्य में शशि जी के जीवन के प्रत्येक पहलू पर बारीकी से अध्ययन किया गया है। जिसे उनसे जुड़े कई लोगों से बातचीत कर उनके बारे में सारे तथ्यों को इकट्ठा कर उनका अवलोकन किया गया है। शोध कार्य को अध्यायों में बाँट कर उनसे सम्बंधित अध्ययन को सन्दर्भ सहित व्याख्यायित किया गया है।